ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 127-131
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

भारत में ज्ञानवान मानव पूँजी संसाधन विकास की आवश्यकता का सकारात्मक परिदृश्य : एक अध्ययन

विनीत नारायण दूबे
एसोसिएट प्रोफेसर– भूगोल विभाग, श्री मुरली मनोहर टाउन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बलिया (उ0प्र0), भारत

Received- 08.05.2019, Revised- 12.05.2019, Accepted - 15.05.2019 E-mail: -vineetdubey1968@gmail.com

सारांश : *मानव विकास सूचकांक के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार विश्व के 189 देशों की सूची में भारत का स्थान जहाँ 131वाँ है, वहीं सम्भावित औसत आयु के आधार पर 125वाँ, प्रौढ़ साक्षरता के आधार पर 120वाँ, सकल भर्ती अनुपात के आधार पर 132वाँ तथा प्रतिव्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद दर के आधार पर 128वाँ स्थान वर्तमान समय में भारत वर्ष की अनुमानित जनसंख्या लगभग 133 करोड़ है, वहीं वर्ष 2001 के राष्ट्रीय जनगणना आंकड़ों के अनुसार 102.8 करोड़ (1.028 अरब) थी। वर्ष 2001 के आंकड़ों से यदि वर्तमान जनसंख्या को देखा जाय तो लगभग दस वर्षों में 17.2 करोड़ की अभिवृद्धि हुई, जो निश्चित ही विकासशील देश के लिए आश्चर्यजनक है। भारत में विद्यमान सभी उपलब्ध संसाधनों की दृष्टि से वर्तमान जनसंख्या वृद्धि को देखा जाय तो सभी दृष्टिकोणों से हमारे संसाधन कम है। विश्व के सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश चीन की आबादी भारतीय जनसंख्या की तुलना में लगभग दो गुनी है, जबकि क्षेत्रफल भी भारत की तुलना में लगभग तीन गुना अधिक है।*

कुंजीभूत शब्द– सूचकांक, नवीनतम, अनुसार, सम्भावित, औसत, आधार, साक्षरता, अनुपात, प्रतिव्यक्ति, सकल।

विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था विकसित देश अमेरिका से तुलना किया जाये तो वहाँ की जनसंख्या लगभग 40 करोड़ है, जबकि क्षेत्रफल भारत का लगभग तीन गुना है। विश्व के लगभग 2.42 प्रतिशत क्षेत्रफल पर विश्व की लगभग 17.5 प्रतिशत जनसंख्या भारत में निवास करती है। एक आँकलन के अनुसार भारत में विश्व का लगभग 10 प्रतिशत कोयला तथा 0.5 प्रतिशत प्राकृतिक तेल तथा प्राकृतिक गैस का अनुमान है। हमारे अर्थशास्त्रियों तथा जनांकिकी विदों का दृष्टिकोण अब अधिक जनसंख्या तथा उससे सम्बन्धित विकास के परिप्रेक्ष्य में बदला है। हमने अपने पड़ोसी देश चीन के उदाहरण को देखकर अपने विचारों में परिवर्तन किया है। विश्व के सर्वाधिक जनसंख्या तथा विश्व की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देश चीन ने पिछले वर्षों में दस प्रतिशत से भी अधिक विकास दर प्राप्त करके एक अनुकरणीय उदाहरण विश्व के सामने प्रस्तुत किया है। चीन के इस विकास दर को प्राप्त करने के पीछे प्रमुख कारणों में अपनी विशाल जनसंख्या को 'मानव पूँजी' में परिवर्तन करना है। भारतीय अर्थव्यवस्था के सम्बन्ध में विद्वानों का आंकलन है कि आगामी वर्षों में भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होगी, तब इसे संचालित करने के लिए हमारे देश में कुशल, सुयोग्य तथा ज्ञानवान मानव संसाधन का अभाव होगा।

प्रस्तुत शोध–पत्र में उन सभी विकल्पों की तलाश की गई है कि किस प्रकार पड़ोसी देश चीन में विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या होने के बावजूद भी विकास दर अधिक है तथा हमारी विकास दर पीछे है। हम कैसे विकास के पथ पर और आगे बढ़ सकते है। इस प्रश्न पर हमें गम्भीरता से विचार करना चाहिए तथा हमें अपनी विशाल जनसंख्या को ज्ञानवान बनाने की दिशा में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। चीन की ही तरह भारत को भी जनसंख्या 'मानव पूँजी' एक महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में परिवर्तित करना चाहिए। यह तभी सम्भव होगा जब यहाँ की सरकारें शिक्षा तथा स्वास्थ्य व्यवस्था को सुव्यवस्थित रूप दें तथा इन दोनों क्षेत्रों में समाज के आखिरी पायदान पर खड़े अर्थात् गरीब व्यक्ति को भी यह सुविधा सुलभ हो सके। इसके लिए अन्य विकल्पों के साथ–साथ हमें देश की वर्तमान मानव विकास की स्थिति, मानव विकास की चुनौतियों, शिक्षा के मौलिक अधिकार की प्राप्ति तथा प्रत्येक व्यक्ति के निम्न आय दर पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। ज्ञान आयोग समिति के अध्यक्ष सैम पित्रोदा की समिति ने भी शिक्षा प्रणाली में सुधार से सम्बन्धित जो सिफारिशें प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह जी को अप्रैल 2010 में सौंपी है, उसमें भी उन्होंने भारत की मानव सम्पदा संसाधन को 'भावी पूँजी' के रूप में विकसित करने का सुझाव दिया है। इसी में देश का तथा स्वयं का हित भी निहित है। देश के शैक्षिक स्तर व ढाँचे में जिन ऊँचाइयों को प्राप्त करने की आशा स्वतंत्रता प्राप्ति के तत्काल बाद थी, उन्हें स्वतंत्रता प्राप्ति के 62 वर्षों के बाद भी हम नहीं प्राप्त कर सके हैं, जैसे–जैसे हमारा आर्थिक ढाँचा आगे बढ़ रहा है, उसी के साथ–साथ शैक्षिक ढ़ाँचें को भी बढ़ना चाहिए लेकिन वह

काफी पीछे है। इसके प्रमुख उत्तरदायी कारकों में शैक्षिक संस्थाओं में विभिन्न निकाय, महँगी शिक्षा, सरकारी प्रोत्साहन व शिक्षा में बजट का अभाव आदि प्रमुख हैं। यदि हम ईमानदारी से शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन ला सकें तो हमारे देश की लगभग सवा अरब हो चुकी जनसंख्या देश के लिए भार नहीं बल्कि महत्वपूर्ण मानव संसाधन पूँजी के रूप में होगी। भविष्य में विश्व के सबसे बड़े प्रथम अर्थव्यवस्था वाले देश संयुक्त राज्य अमेरिका तथा द्वितीय अर्थव्यवस्था वाले देश चीन के बाद भारत भी इसी आधार पर विश्व का तीसरा बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश होगा। इसके लिए शिक्षा के बुनियादी ढाँचे में सुलभता, समानता, समावेशन तथा गुणवत्ता की विशेष आवश्यकता होगी, तभी जनसंख्या का भावी मानव पूँजी संसाधन के रूप में विकास किया जा सकता है। अन्यथा जनसंख्या देश के लिए भार सदृश्य ही होगा।

प्रस्तावना– भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा और अपेक्षाकृत युवा लोकतंत्र है। वर्ष 1991 में प्रारम्भ हुई भारतीय अर्थव्यवस्था उदारीकरण के बाद एक जीवंत और तेजी से विकसित होने वाले उपभोक्ता बाजार में परिणित हो चुका है। लगभग 36 खरब, 66 अरब अमेरिकी डॉलर के समतुल्य सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के साथ क्रय शक्ति के संदर्भ में भारतीय अर्थव्यवस्था अमेरिका, चीन तथा जापान के बाद चौथी सबसे बड़ी तथा 71 अरब, 98 करोड़ अमेरिकी डॉलर के आधार पर विश्व का 12वाँ सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश है। सम्पूर्ण विश्व के सबसे ताकतवर देश अमेरिका ने अपने नवीनतम सर्वेक्षण आँकलन वर्ष 2010 के आधार पर अमेरिका तथा चीन के बाद भारत को विश्व का तीसरा सबसे ताकतवर देश के रूप में तथा 30 से 40 वर्षों के बाद विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देश होने के रूप में अनुमान व्यक्त किया है। 2001 के जनगणना आँकड़ों के अनुसार भारत की जनसंख्या विश्व में दूसरे स्थान पर है। एक अनुमान के अनुसार आगामी 20 वर्षों में यह चीन की जनसंख्या से आगे निकलकर सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश हो जायेगा। भारत के प्रमुख राज्यों उत्तर प्रदेश की जनसंख्या ब्राजील, महाराष्ट्र की मैक्सिको, बिहार की जर्मनी, पश्चिम बंगाल की वियतनाम, आन्ध्र प्रदेश की फिलीपीन्स, तमिलनाडु की थाईलैण्ड, मध्य प्रदेश की फ्रांस, राजस्थान की इटली कर्नाटक की कांगोगण राज्य तथा गुजरात की यूक्रेन देश के लगभग बराबर है। भारतीय जनसंख्या पिछले 60 वर्षों से स्थिरीकरण की समस्या से त्रस्त है, वर्ष 2045 तक स्थिरीकरण का पूर्वानुमान व्यक्त किया गया था, लेकिन इसके समय में और अभिवृद्धि की अपेक्षा है। इसका सकारात्मक पहलू यह है कि भारतीय जनसंख्या का अधिकांश युवा वर्ग के अन्तर्गत आता है, जिससे अधिक उत्पादकता तथा कम निर्भरता की अपेक्षा की जाती है। एक ओर दुनिया के विकसित देश बूढ़े हो रहे हैं तथा उनकी उत्पादकता और जन्मदर घट रही है, वहीं दूसरी ओर भारत के युवा वर्ग विशाल जनशक्ति के रूप में आगे बढ़ सकते हैं। जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा सबसे बड़ा देश जब यह कहता है कि बहुसंख्य गतिविधियों के लिए उसे जनशक्ति के अभाव का सामना करना पड़ रहा है तो विश्वास ही नहीं होता कि ऐसा है, यही लगता है कि निश्चित ही देश के मानव संसाधन प्रबन्धन में कहीं न कहीं कोई कमी शेष है। एक ओर लगभग 1 अरब, 33 करोड़ जनसंख्या जनसंख्या वाला देश तथा दूसरी तरफ सर्वाधिक युवा वर्ग के अन्तर्गत जनसंख्या होने के बावजूद भी देश में कुशल, योग्य तथा प्रतिभाशाली कर्मचारियों का अभाव निश्चित ही देश में किसी न किसी गहरी भूल की ओर संकेत करता है।

अध्ययन का उद्देश्य– प्रस्तुत शोध–पत्र का प्रमुख उद्देश्य है कि कैसे विश्व की सर्वाधिक जनसंख्या वाले दूसरे सबसे बड़े देश भारत में कुशल तथा योग्य श्रम का अभाव है। सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश चीन से विकास दर में हमारा पीछे रहना तथा विशाल जनसंख्या को पूँजी मानकर कुशल तथा योग्य श्रम उत्पादन में परिवर्तन करना प्रमुख रूप से अध्ययन का उद्देश्य है।

आँकड़े एवं विधि तंत्र– प्रस्तुत शोध–पत्र अध्ययन द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। यह आँकड़े भारत की जनगणना 2001 एवं 2011 तथा योजना आयोग द्वारा जारी किये गये आँकड़ों तथा अन्य स्रोतों से प्राप्त किये गये हैं।

भारत में मानव संसाधन विकास की चुनौती– वैश्विक स्तर पर मानव विकास की स्थिति को जानने के लिए सहस्राब्दि विकास लक्ष्य निर्धारित किये गये हैं, जिनमें जनस्वास्थ्य, शिक्षा, महिला विकास तथा आजीविका आदि से सम्बन्धित लक्ष्य प्रमुख हैं। सम्बन्धित विकास लक्ष्य में भारत की स्थिति विकसित देशों की तुलना में काफी पीछे है। भारत में जन्म पर, जीवन प्रत्याशा वर्ष 2002 से 2006 में 63.5 वर्ष थी, जिसमें पुरुषों की जीवन प्रत्याशा 62.6 वर्ष तथा महिलाओं की 64.2 वर्ष, शिशु मृत्यु दर 2007 में 55 प्रति हजार जन्म पर, जन्म दर 23.1 तथा मृत्यु दर 7.4 प्रति हजार थी। जन्म पर जीवन प्रत्याशा का विश्व औसत वर्ष 2006 में पुरुषों का 66 वर्ष तथा महिलाओं का 70 वर्ष था। ऐसी स्थिति में भारत का स्थान विश्व के औसत से भी नीचे है, जो एक चिंतनीय विषय है। भारत में बच्चों को प्राथमिक शिक्षा दिलाने के क्षेत्र में आगे बढ़ा है फिर भी निरक्षरता

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

चिन्ता का विषय है। भारतीय प्राथमिक शिक्षा पूर्णता दर वर्ष 2006 के आँकड़ों के आधार पर विश्व के औसत 80 प्रतिशत के बराबर है जबकि दक्षिणी अफ्रीका, चीन तथा ब्राजील में प्राथमिक शिक्षा दर भारतीय औसत से अधिक लगभग 100 प्रतिशत है। बेसिक देशों में भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ यह 100 प्रतिशत से कम है। भारत में महिला साक्षरता का कम होना भी सोचनीय बिन्दु है। प्रत्येक बच्चे को प्राथमिक शिक्षा दिलाने की दिशा में शिक्षा का मौलिक अधिकार कानून 01 अप्रैल, 2010 में लागू होने से साक्षरता अभिवृद्धि में आशातीत सफलता की अपेक्षा की जा सकती है।

शिक्षा का मौलिक अधिकार– मानव के संसाधन पूँजी के रूप में विकास करने में शिक्षा का मौलिक अधिकार महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। भारतीय संविधान में बच्चों के शिक्षा के मौलिक अधिकार के लिए किया गया संविधान में 86वाँ संशोधन 01 अप्रैल, 2010 निश्चित ही साक्षरता वृद्धि में सहायक होगा। प्राथमिक शिक्षा दर में भारत भी अब बेसिक देशों में सम्मिलित होगा। इस कानून के लागू होने से देश के लगभग 92 लाख बच्चे जो प्राथमिक शिक्षा से वंचित हैं, वह प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। इस कानून में यह प्रावधान है कि 6 से 14 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों को स्कूल पहुँचाने की जिम्मेदारी विभिन्न योजनाओं तथा सहायता द्वारा स्थानीय तथा राज्य सरकारों की है। केन्द्र तथा राज्य सरकारों की इसमें आर्थिक हिस्सेदारी 55:45 के अनुपात में होगी। देश के लगभग 22 करोड़ बच्चे जो 6 से 14 वर्ष के आयु समूह में आते हैं, उन्हें निश्चित ही इस कानून से लाभ की अपेक्षा है। इस आयु समूह वर्ग के कुल बच्चों में से 4.6 प्रतिशत (लगभग 92 लाख) बच्चे जो स्कूलों की दहलीज से बाहर हैं, उन्हें भी शिक्षित किया जायेगा। भारत भी निकट भविष्य में 6–14 आयु वर्ग के शत्–प्रतिशत बच्चों को प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराने वाले देशों की सूची में सम्मिलित हो जायेगा।

प्रति निम्न आय दर– मानव विकास सूचकांक निर्धारण में प्रति व्यक्ति आय दर भी महत्व रखती है। इसे देश के प्रत्येक व्यक्ति के औसत आय के आधार पर निर्धारित किया जाता है। भारत में पिछले कुछ वर्षों में सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि हुई है। ऊँची विकास दर प्राप्त करने के आधार पर भारत तेज गति से विकास करने वाले देशों की श्रेणी में सम्मिलित हो गया है। वैश्विक आर्थिक मन्दी का जिस प्रकार से डटकर भारत ने सामना किया है, उससे उसकी छवि विश्व परिदृश्य में एक मजबूत देश के रूप में उभरी है, किन्तु प्रतिव्यक्ति निम्न आय दर तथा गरीबी ही ऐसे महत्वपूर्ण कारक है जो विकसित देशों की श्रेणी में सम्मिलित होने के मार्ग में बाधक है। भारत में सकल राष्ट्रीय आय वर्ष 2007 के आँकड़ों के अनुसार 950 डालर थी जो विश्व के प्रतिव्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय 7950 डालर से काफी कम है। प्रतिव्यक्ति राष्ट्रीय आय का किसी भी देश के व्यक्तियों के जीवन स्तर निर्धारण में विशेष महत्व होता है। भारत में प्रतिव्यक्ति आय का कम होना यहाँ की विपन्नता को प्रदर्शित करता है। योजना आयोग के स्रोतों के अनुसार वर्ष 2004–05 में देश की 21. 8 प्रतिशत जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे थी जबकि वर्ष 1992 से 2005 के आँकड़ों के अनुसार सबसे गरीब भाग 8. 1 प्रतिशत था। वर्ष 2000 से 2007 के आँकड़ों के अनुसार पांच वर्ष से कम आयु के 43.5 प्रतिशत बच्चे कुपोषण के शिकार थे। भारत सरकार द्वारा प्रारम्भ किये गये ग्रामोत्थान तथा विकास से सम्बन्धित मनरेगा, जवाहर रोजगार योजना प्राथमिक कक्षा के विद्यार्थियों के लिए मध्यान्ह भोजन योजना तथा छात्रवृत्ति योजनाओं द्वारा निश्चित ही गरीबी उन्मूलन तथा सर्वशिक्षा अभियान जैसे राष्ट्रीय कार्यक्रमों के आधार पर साक्षरता में वृद्धि सम्भावित है। यद्यपि भारत में मानव विकास की स्थिति पिछड़ी अवस्था में है जो यूएनडीपी के आँकड़ों से भी स्पष्ट है, इसी के साथ यह भी स्वीकार करना होगा कि भारत आर्थिक विकास में काफी तेजी से प्रगति कर रहा है जो विगत वर्षों के जीडीपी में अभिवृद्धि के आँकड़ों से स्पष्ट है। हमारा बढ़ता आर्थिक विकास भविष्य में 'मानव विकास संसाधन पूँजी' के विकास में सहायक होगा तथा आर्थिक विकास के साथ मानव विकास भी साथ–साथ आगे बढ़ेगा।

शिक्षा के द्वारा कौशल विकास की आवश्यकता– भारत सरकार का नवयुवकों के कौशल तथा प्रतिभा के विकास करने की अपनी जिम्मेदारी के प्रति जागरूकता से स्पष्ट होता है कि वह निश्चित ही इस दिशा में सजग हो रहा है। देश की विभिन्न सेवाओं में योग्य नवयुवकों की बढ़ती माँग तथा उनकी माँग के अनुसार कमी तथा प्रतिभा का अभाव होना धीरे–धीरे क्रान्ति का रूप ले रहा है। आज सभी सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाएँ बस एक ही लक्ष्य निर्धारित कर रही हैं कि कैसे यहाँ के नवयुवकों को रोजगारों के योग्य बनाया जाय जो पढ़े–लिखे तो हैं लेकिन किसी रोजगार के योग्य नहीं हैं। लगभग 120 करोड़ की जनसंख्या वाले इस देश में 2015 ई0 तक लगभग 80 करोड़ नवयुवकों को रोजगार प्राप्ति की आवश्यकता का अनुमान व्यक्त किया गया है। हमारे देश की आधी से अधिक जनसंख्या 15 से 49 आयु वर्ग की श्रेणी में आती हैं, लेकिन इनमें से लगभग 33 प्रतिशत लोग साक्षर ही नहीं हैं। आठवीं कक्षा तक 98.5 प्रतिशत लड़के तथा 91 प्रतिशत लड़कियाँ ही पढ़ाई करती हैं, बाद में इनका प्रतिशत क्रमशः

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

57.6 तथा 46.2 प्रतिशत ही रह जाता है। लगभग 50 प्रतिशत लड़के तथा लड़कियाँ आठवीं कक्षा के बाद पढ़ाई छोड़ देते हैं। हमारी परम्परागत शिक्षा प्रणाली एक सर्वसम्पन्न शिक्षा प्रणाली का गुण नहीं रखती, जो व्यावसायिक प्रशिक्षण के साथ–साथ कौशल एवं प्रतिभा बढ़ाने का उपयुक्त अवसर व साधन प्रदान कर सके। शिक्षा प्रणाली में दोष तथा समयानुसार परिवर्तन न होने के ही कारण वर्तमान शिक्षा प्रणाली द्वारा शिक्षित देश के केवल 5 प्रतिशत व्यक्ति ही विशेष कार्यकुशलता रखते हैं, जबकि अन्य देशों में प्रमुखतः दक्षिण एशिया में 85, मलेशिया में 95, रुस, अमेरिका तथा चीन में 60 प्रतिशत से भी अधिक हैं। प्रबन्धन क्षेत्र के विशेषज्ञ सी0के0प्रहलाद के अनुसार 2023 ई0 तक जब भारत की स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूर्ण होंगे। हमें लगभग 50 करोड़ लोगों को कार्यकुशल बनाना होगा। इसी प्रकार मैकेंजी द्वारा तैयार किये गये एक रिपोर्ट के अनुसार अगले 10 वर्षों तक भारत को आज की तुलना में 10 गुना अधिक योग्य मानव संसाधन क्षमता बढ़ानी होगी। आपूर्ति की दृष्टि से देखा जाय तो अनुमानतः 14 लाख व्यक्ति प्रतिवर्ष रोजगार के लिए तैयार होते हैं, अर्थात 10 वर्षों में लगभग 1 करोड़ 40 लाख लोग तैयार होंगे जबकि सीआईआई व्यावसायिक संस्थान के एक आँकलन के अनुसार आगामी पाँच वर्षों में ही 10 करोड़ से अधिक लोगों की आवश्यकता होगी। उपरोक्त आँकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है प्रतिव्यक्ति कि हमारे देश में कुशल श्रम की माँग तथा आपूर्ति में बहुत अंतर है, विभिन्न प्रयासों के द्वारा दोनों में अन्तर की खाई को भरने की आवश्यकता देश को हैं।

भारतीय उच्च शिक्षा व्यवस्था का वर्तमान परिदृश्य– वर्तमान समय में भारत की उच्च शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत कुल 504 विश्वविद्यालय तथा विश्वविद्यालय स्तर की संस्थाएँ जिनमें 243 राज्य वि0वि0, 53 राज्यों के निजी विश्वविद्यालय, 40 केन्द्रीय विश्वविद्यालय, 130 मान्यता प्राप्त डीम्स विश्वविद्यालय, 33 राष्ट्रीय महत्व की संस्थाएँ, 5 विभिन्न राज्यों के कानूनों के तहत स्थापित संस्थाएँ, 2565 महिला महाविद्यालयों सहित 25951 महाविद्यालय भी हैं। ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना के प्रारम्भ में 19 केन्द्रीय विश्वविद्यालय, 7 प्रौद्योगिकी संस्थान, 20 राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, 4 भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, 2 भारतीय विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान, 6 भारतीय प्रबन्धन संस्थान, एक योजना और वास्तुकला विद्यालय, 13 नये केन्द्रीय विश्वविद्यालय के अलावा 3 प्रांतीय विश्वविद्यालय का केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में परिवर्तन 8 नये आईआईटी, 7 आईआईएम, 3 आईआईएमईआर, 2 एसपीए तथा अनेक नई पालिटेक्निक संस्थाएँ भी स्थापित की गई हैं। प्रमुख विचाराधीन संस्थाओं में 10 नये राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थानों को मंजूरी, पिछड़े जिले में 374 महाविद्यालयों की स्थापना, विश्वस्तरीय 14 विश्वविद्यालयों (नवोन्मेषी विश्वविद्यालय) तथा 20 नये आईआईटी प्रमुख हैं। देश में स्थापित उच्च शिक्षा तथा तकनीकी शिक्षा से सम्बन्धित इतने अधिक संस्थाओं द्वारा यदि उपयुक्त सुलभता, समानता, समावेशन तथा गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान की जाए जो निश्चित ही देश में योग्य मानव संसाधन पूँजी का विकास किया जा सकता है तथा भविष्य में बढ़ती माँग के अनुसार हम योग्य कुशल नवयुवकों को तैयार कर सकते हैं।

भारतीय जनसंख्या का भावी पूँजी संसाधन के रूप में विकास के अवलोकनीय बिन्दु– दिनानुदिन बढ़ती भारतीय जनसंख्या जो भविष्य में जनसंख्या में विश्व में प्रथम चीन का स्थान लेने वाली है। यदि चीन की ही तरह यहाँ भी इसे सकारात्मक रूप देकर भावी मानव पूँजी संसाधन के रूप में विकसित किया जाये तो भारत भी एक शक्तिशाली, योग्य मानव संसाधन पूँजीयुक्त दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन सकता है। निम्नलिखित उपाय इस दिशा में मील का पत्थर सिद्ध हो सकते हैं–

– भारतीय जनसंख्या के 55 करोड़ व्यक्तियों का 25 वर्ष से कम आयु का होना मानव संसाधन के अतुलनीय निधि के रूप में हमें प्राप्त है, इसे एक बड़े जनसंख्यात्मक लाभांश के रूप में मानकर भावी मानव पूँजी के रूप में इसके ज्ञानात्मक कौशल के विकास के लिए आधारभूत सुविधाओं की प्राप्ति सुनिश्चित की जानी चाहिए, तभी हम 21वीं सदी की चुनौतियों का सामना डटकर कर सकते हैं।

– शिक्षा के अवसरों में वृद्धि, नवाचार एवं उद्यमिता को बढ़ावा देने वाली एक समावेशी शिक्षा प्रणाली के विकास की तत्काल आवश्यकता है, जो बढ़ती अर्थव्यवस्था की कौशल आवश्यकताओं को पूरा कर सके।

– ज्ञानवान समाज के निर्माण में कहाँ क्या आवश्यकता है? इसके लिए राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (एनकेसी) ने विस्तारपूर्वक विचार करके देश की ज्ञानदात्री संस्थाओं की बुनियादी सुविधाओं में सुधार के लिए 27 प्रमुख क्षेत्रों के लिए लगभग 300 सिफारिशें दी है। केन्द्र सरकार द्वारा इसे कार्यान्वित करके इस दिशा में लक्ष्य हासिल किया जा सकता है।

– देश के प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा प्रणाली में विभिन्न आधारभूत सुविधाओं को सुनिश्चित करने तथा गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्राप्ति के उपायों पर विशेष ध्यानाकर्षण की आवश्यकता है, तभी देश के शैक्षिक ढाँचे में सुधार

किया जा सकता है।

– उच्च शिक्षा के विकास तथा मानव को भावी मानव पूँजी के रूप में विकसित करने के लिए प्रो0 यशपाल तथा सैम पित्रोदा की अध्यक्षता में गठित ''ज्ञान आयोग'' के सुझावों पर गम्भीरता पूर्वक विचार करके उसको क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में इनके सुझाव निश्चित ही आमूल–चूल परिवर्तन करने में सक्षम है, ऐसी अपेक्षा है।

– विश्व परिदृश्य में श्रम बाजार के अनुरूप गुणवत्तायुक्त शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए, तभी हमारी शिक्षा तथा इसको प्राप्त करने वाले लोगों का महत्व होगा। इसकी प्राप्ति की दिशा में आवश्यक कदम उठायें जाने की तत्काल आवश्यकता है।

– आजादी के 63 वर्ष व्यतीत होने के बाद भी हमारा शैक्षिक ढाँचा उन ऊँचाइयों को नहीं छू पाया है, जिसकी देश को आजादी के तत्काल बाद आवश्यकता थी। अतः देश के शैक्षिक ढाँचे को ऊँचाईयों पर पहुँचाने के लिए कदम उठाये जाने चाहिए।

– भविष्य में विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने वाला भावी देश भारत का आर्थिक ढाँचा जितनी तेजी से आगे बढ़ रहा है, उसकी तुलना में हमारा शैक्षिक स्तर काफी पीछे है। संतुलित विकास का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए दोनों को एक साथ चलने की आवश्यकता है। शैक्षिक तथा आर्थिक ढाँचे को एक सम्पन्न संतुलित रखने के लिए आवश्यक कदम उठाये जाने चाहिए।

– देश में विभिन्न प्रकार के शैक्षिक ढाँचे तथा उनको संचालित करके वाले निकायों तथा प्रशासन में काफी विभेद है, सभी के नियंत्रण के लिए एक ही नियामक संस्था का गठन किया जाना चाहिए, जिससे सभी पर प्रभावकारी नियंत्रण स्थापित किया जा सके।

– सरकारी प्रोत्साहन तथा शिक्षा के लिए बजट का अभाव ही इसके विकास में एक बाधक तत्व है, अतः शिक्षा के लिए पर्याप्त बजट का प्रावधान पूर्व में ही निश्चित किया जाना चाहिए, जिससे विकास के मार्ग में धनाभाव की समस्या न आ सके।

निष्कर्ष– भारतीय जनसंख्या के भावी मानव पूँजी संसाधन के रूप में विकास करने के लिए उसे पूर्ण रूप से सभी दृष्टिकोणों से पूर्ण रहना आवश्यक है। मानव पूँजी के विकास में शिक्षा के साथ–साथ स्वास्थ्य, सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय, सांस्कृतिक तत्वों पर भी विशेष ध्यानाकर्षण की आवश्यकता होती है, क्योंकि एक स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क तथा उसी से सम्पूर्ण क्रियाएँ संचालित होती हैं। भविष्य में कुशल मानव संसाधन बनाने के लिए जितने भी आवश्यक तत्व हैं, उन पर ध्यान देकर ही हम इसे सम्भव कर सकते हैं तभी देश की लगभग सवा अरब हो चुकी जनसंख्या वाले देश के लिए भार न होकर महत्वपूर्ण मानव संसाधन पूँजी के रूप में होगी तथा भारत भविष्य में विकास के प्रगति पर निरन्तर आगे बढ़ेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शुक्ला मधु : आलेख–भारत में शिक्षा का विस्तार, योजना मासिक, सितम्बर 2004, पृष्ठ 13–16.
2. पित्रोदा, सैम : आलेख, ज्ञानवान समाज के निर्माण की जरूरत, योजना मासिक पत्रिका, सितम्बर, 2009, पृष्ठ 5 एवं 6.
3. अग्रवाल, पवन, आलेख, श्रम बाजार के अनुरूप उच्च शिक्षा, योजना, मासिक पत्रिका, सितम्बर, 2009, पृष्ठ 11–13.
4. वर्मा, सरोज कुमार, आलेख : योजना मासिक पत्रिका, सितम्बर, 2009, पृष्ठ 23–25.
5. चन्सौरिया, मुकेश, भारत में उच्च शिक्षा समस्याएँ, योजना मासिक, सितम्बर, 2009, पृष्ठ 27–30.
6. अग्रवाल, नरेन्द्र एम0 : उदार और विकासोन्मुखी अर्थव्यवस्था में मानव संसाधन चुनौतियाँ, योजना, जून 2010, अंक पृष्ठ 6–8.
7. उच्च शिक्षा वर्तमान परिदृश्य और भावी चुनौतियाँ, योजना हिन्दी अंक, जून 2010, पृष्ठ 13–14.
8. आर्थिक विकास में मानव पूँजी : आलेख, योजना अंक, जून 2010.
9. दूबे, विनीत नारायण : भारतीय उच्च शिक्षा व्यवस्था में सुधार हेतु नवगठित विभिन्न आयोगों के सुझाव एवं विचार, शोध पत्र प्रस्तुत, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सेमीनार, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी, दिनांक 11–12 सितम्बर, 2010.

*****